सेन्ट्रल जोन इंश्योरेन्स एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से सम्बद्ध)

प्रभांजलि, 33, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एस.आर. उर्ध्वरेषे **परिपत्र क्र. : 03/2013**

महासचिव : का. बी. सान्याल **दिनांक : 01.05.2013**

मध्यक्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों के नाम

प्रिय साथियों,

विषय : मई दिवस 2013

विश्व मेहनतकशों के महान पर्व मई दिवस 2013 के मौके पर हम विश्व के मेहनतकश जनता के साथ-साथ भारत के मेहनतकशों, बीमा कर्मियों व मध्यक्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों को क्रांतिकारी शुभकामनायें प्रेषित करते हैं।

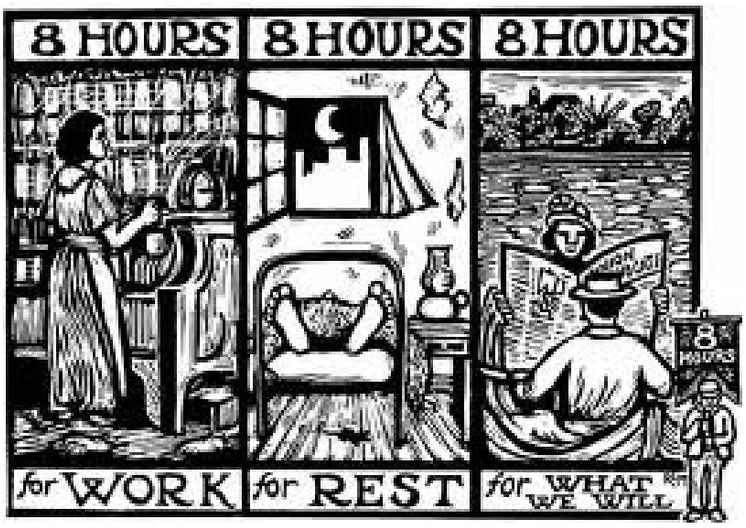

शिकागो के मजदूरों ने 8 घण्टे के काम के अधिकार की मांग को लेकर जिस संघर्ष की शुरूआत करते हुये अप्रतिम बलिदान दिया था, उसकी याद में शोषण के खिलाफ शोषणहीन समाज निर्माण हेतु संघर्षरत विश्व मेहनतकश के लिये, मई दिवस इस संघर्ष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुर्नउद्घोषित करने का अवसर रहा है। आज के दौर में इसकी प्रासंगिकता और महत्वपूर्ण बन गई है। जब संपूर्ण विश्व पूंजीवाद, संकट और दलदल में बुरी तरह धंसा हुआ है। इस संकट की आड़ में विभिन्न देशों में सामाजिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का चोला भी पूंजीवादी हुक्मरानों ने उतार फेंका है और उसने लम्बे संघर्षों से हासिल श्रमिकों के सामाजिक हितलाभों पर ही वहशी हमले तीखे किये हैं। पूंजीपति वर्ग इस संकट के बोझ को मेहनतकशों के पीठ व पेट पर हमले कर थोप रही हैं। नतीजतन छंटनी, वेतन कटौती, सामाजिक सुविधाओं के खात्मे और रोजगारहीनता बढ़ी है। उदाहरण के तौर पर वर्ष 2008 की तुलना में यूरोप में 10 मिलियन और लोग रोजगारहीन हो गये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार बेरोजगारी ऐतिहासिक स्थिति पर पहुंच गई है। रोजगार का संकट इतना गहरा हो गया है कि विश्व के 75 मिलियन युवा रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं। चंद हाथों में पूंजी का संकेन्द्रीकरण बढ़ा है। असमानता की खाई चौड़ी हुई है। आक्सफाम के अध्ययन के अनुसार विश्व के अमीर 1 प्रतिशत की आय में 60 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है जबकि विश्व की बहुमत जनता गरीबी की दलदल में धकेली गई है। विश्व के अमीर 300 लोगों की सम्पत्ति दुनिया के सबसे गरीब 300 करोड़ लोगों की सम्पत्ति से अधिक है। इस स्थिति पर नोबल पुरस्कार विजेता जोसफ स्टिगलिज ने इसलिये तथाकथित मितव्ययी (आस्टेरिटी) कदमों व निजीकरण की कार्यवाहियों पर टिप्पणी करते हुये कहा था, ''इस दवा ने पूर्वी

एशिया, लातिनी अमरीका तथा और कहीं भी कोई असर नहीं किया और यूरोप में भी यह नुस्खा काम नहीं आया।'' इसलिये यूरोप सहित समूचे विश्व में इन पूंजीवादी आक्रमणों के खिलाफ संघर्ष तीखे हुये हैं। ''हम 99 प्रतिशत बनाम तुम 1 प्रतिशत'' के नारे के पीछे विश्व स्तर पर लामबंदी में अभूतपूर्व जनभागीदारी में भी यह प्रतिध्वनित हुआ है, मई दिवस इस संघर्ष को और विकसित करने का माध्यम बनेगा यह हमारा विश्वास है।

भारत के शासक वर्ग ने नवउदारवाद के वैश्विक अनुभवों की रोशनी में अपनी नीतियों में बदलाव के बजाय विश्व वित्तीय पूंजी की मांग के समक्ष समर्पणकारी और नवउदारवादी आर्थिक नीतियों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता का ही इजहार किया है। इन नीतियों के चलते देश में चंद खरबपतियों की संख्या में इजाफा हुआ, जबकि देश की बहुमत आबादी भूख-कुपोषण, अशिक्षा, बेरोजगारी, अस्वस्थता, किसानों की आत्महत्यायें, दरिद्रता और वंचना की शिकार हुई। महंगाई से आम जनता का जीवन मुहाल हुआ। भ्रष्टाचार ने तो सार्वजनिक सम्पत्ति के नग्न लूट के अब तक के सारे कीर्तिमानों को ही ध्वस्त कर दिया है। नित नये घोटालों का उजागर होना मानो सामान्य बात हो गई है। सरकार बहुसंख्यक जनता को राहत के लिये कदम उठाने के बजाय पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस, खाद, बीज की सहायता में कटौती कर जनता की जेबों पर हल्ला बोल रही है। वह जनता को राहत के लिये साधनों की कमी का रोना रो रही है। लेकिन यही सरकार नैगम श्रेणी को वित्त वर्ष 2012-13 में 5.7 लाख करोड़ रू. की रियायतें दे रही है। एक अनुमान के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में सरकार ने देश के नैगम घरानों को लगभग 20 लाख करोड़ की रियायतें दी है। वित्तीय घाटे को लेकर आंसू बहा रही सरकार इसके अलावा अप्रत्यक्ष कर की वसूली नहीं कर रही जो बढ़कर 4.38 करोड़ रू. तक जा पहुंचा है। सरकार नवउदारवादी आर्थिक नीतियों की रफ्तार को आगे बढ़ाने सार्वजनिक क्षेत्र के विनिवेश, बैंकिंग क्षेत्र में देशी-विदेशी व्यावसायियों को छूटें, श्रम कानूनों में मालिकपरस्त परिवर्तन करने, पेंशन, खुदरा व बीमा क्षेत्र में विदेशी पूंजी निवेश की इजाजत देने या वर्तमान सीमा बढ़ाने का देश विरोधी फैसला ले रही है। जनवादी अधिकारों पर हमले बढ़े है। उदारवादी नीतियों ने सामाजिक ताने-बाने के प्रत्येक क्षेत्र पर हमलों को गहरा किया है। महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा की बढ़ती घटनायें भी पूंजीवादी नीतियों व समाज में सामंती मूल्यों की पैठ के चलते बढ़ी है। लेकिन यह भी एक सच्चाई है कि भारत के मेहनतकशों ने सरकार की इस साम्राज्यवाद के प्रति समर्पणकारी नीतियों के खिलाफ अविचल संघर्ष को तेज किया है। देश के श्रमिक वर्ग के संघर्षों की कतारों में 20-21 फरवरी 2013 के दो दिवसीय संयुक्त देशव्यापी हड़ताल में मेहनतकश श्रमिकों के प्रत्येक हिस्से की भागीदारी के साथ-साथ जनता के विभिन्न हिस्सों की एकजुटता बेमिशाल रही है। महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के विरूद्ध भी जनमत की स्वस्फूर्त व्यापक अभिव्यक्ति में जनता की लामबंदी अभूतपूर्व रही है। मई दिवस के मौके पर हमें विश्वास है कि, भारत में भी नवउदारवाद, महिलाओं के प्रति हिंसा, लिंग, जाति, भाषा, क्षेत्र, धर्म, अंचल के नाम पर विभाजनकारी शक्तियों के खिलाफ मेहनतकशों की वर्गीय एकता के आधार पर मजदूर वर्ग की हिफाजत का संघर्ष और सुदृढ़ होगा।

मई दिवस के मौके पर हम पुनः आप सभी का अभिनंदन करते हुये शांति के पक्ष में, जनतंत्र की हिफाजत में और सर्वोपरि मानव द्वारा मानव के शोषण पर आधारित पूंजीवाद के खिलाफ शोषणरहित समाज के निर्माण के लक्ष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुर्नउद्घोषित कर इस संघर्ष में सतत् व सक्रिय भूमिका का आह्वान करते हैं।

मई दिवस अमर रहे।

दुनिया के मजदूरों एक हो।

क्रांतिकारी अभिवादन सहित,

आपका साथी

(बी. सान्याल)

महासचिव

tô§ý - ¡ÊâwÅÀ âZàÂ¹ìy, yå-19, ¹ªààÈ ÀâªàÊ, Êâuqê (²¦.ªå.) ÀÊsàx 2431149